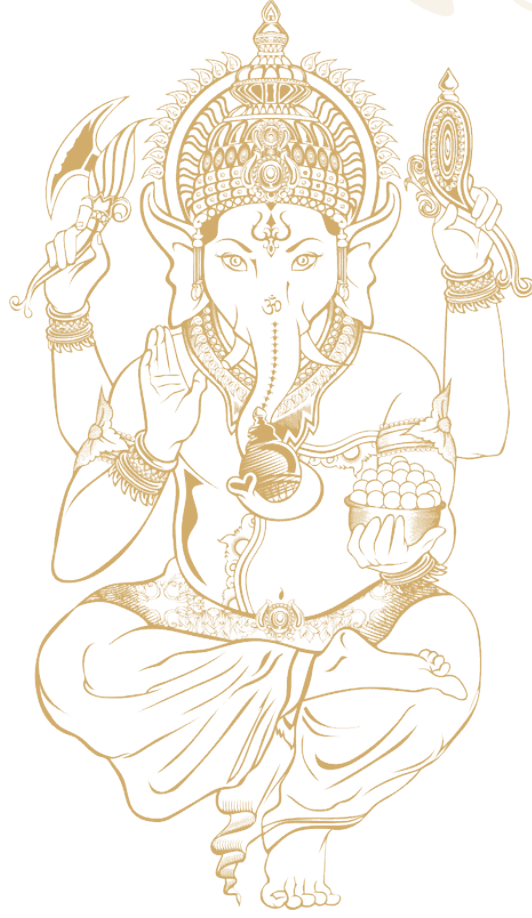




Swapnil Damodhar Pise

02 May 2000

05:05 PM

Nagpur

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120443801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 02/05/2000
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 17:05:00 घंटे
इष्ट _____: 28:27:01 घटी
स्थान _____: Nagpur
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:13:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:51:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:34:34 घंटे
सूर्योदय _____: 05:42:11 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:38:30 घंटे
दिनमान _____: 12:56:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 18:30:23 मेष
लग्न के अंश _____: 28:06:02 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: प्रीति
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: चा-चाणक्य
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1922	वैशाख	12
पंजाबी	संवत : 2057	वैशाख	20
बंगाली	सन् : 1407	वैशाख	19
तमिल	संवत : 2057	चिथिराई	20
केरल	कोल्लम : 1175	मेदम	19
नेपाली	संवत : 2057	वैशाख	20
चैत्रादि	संवत : 2057	वैशाख	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2057	चैत्र	कृष्ण 13

पंचांग

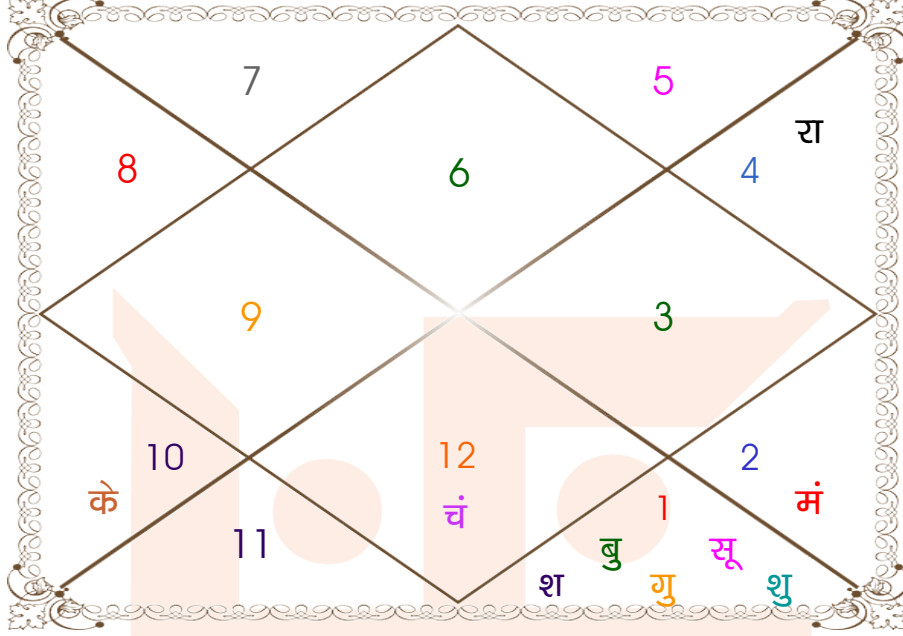
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 14:26:26
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:00:49 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____ : 15:17:55 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 14:26:26 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 40:07:03
भभोग _____ : 57:26:37
भोग्य दशा काल _____ : बुध 5 वर्ष 2 मा 3 दि

घात चक्र

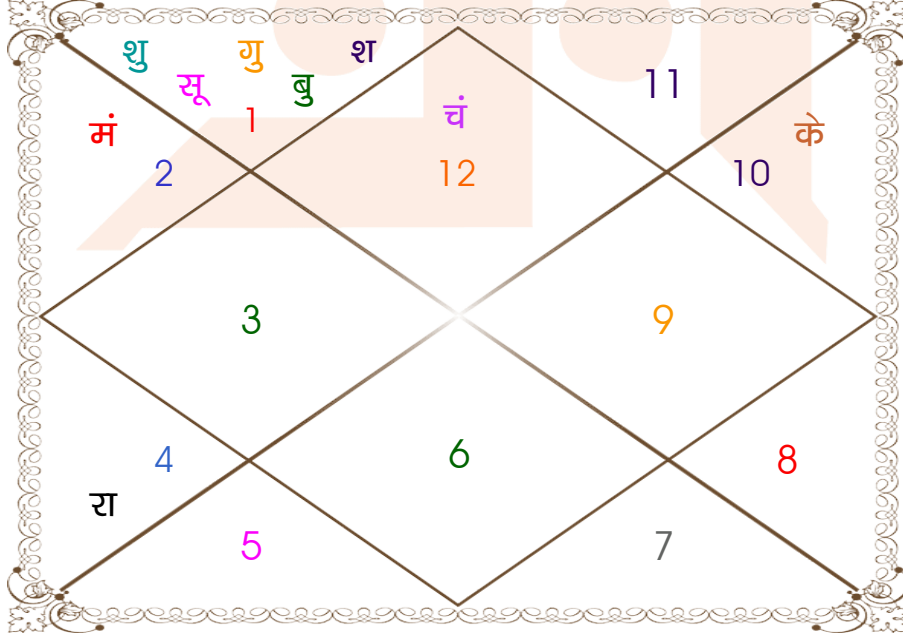
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मृग
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

चं	बु शु	सू श	मं	
				रा
के				
				ल

लग्न कुंडली

मं	श सू गु	बु शु	चं	
				रा
रा				के
				ल

विंशोत्तरी
बुध 5वर्ष 2मा 3दि
बुध

02/05/2000

07/07/2108

बुध	06/07/2005
केतु	06/07/2012
शुक्र	06/07/2032
सूर्य	06/07/2038
चन्द्र	06/07/2048
मंगल	07/07/2055
राहु	06/07/2073
गुरु	06/07/2089
शनि	07/07/2108

योगिनी
उल्का 1वर्ष 9मा 28दि
भामरी

01/03/2023

01/03/2027

भामरी	10/08/2023
भद्रिका	29/02/2024
उल्का	30/10/2024
सिद्धा	10/08/2025
संकटा	30/06/2026
मंगला	10/08/2026
पिंगला	30/10/2026
धान्या	01/03/2027

Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

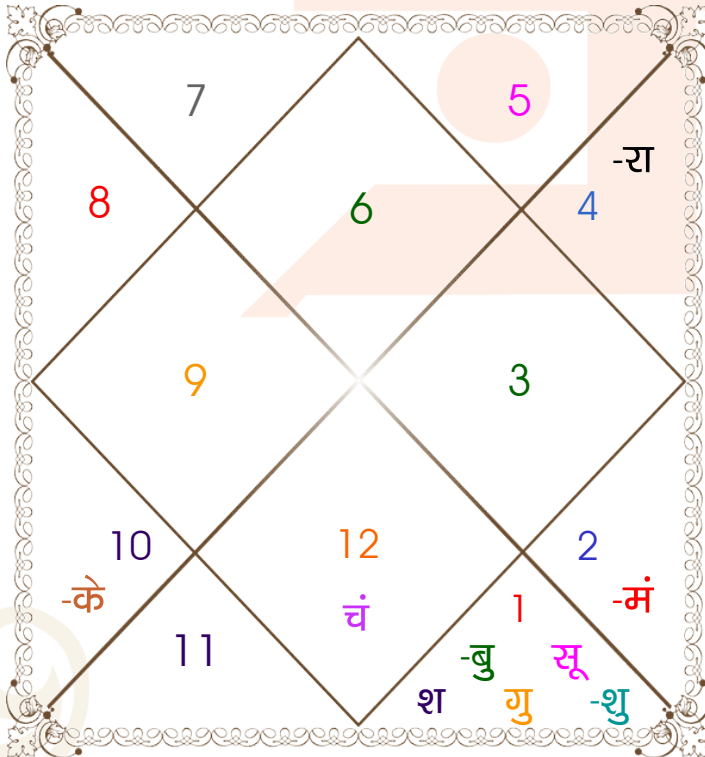
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	28:06:02	332:16:14	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
सूर्य			मेष	18:30:23	00:58:13	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	उच्च राशि
चंद्र			मीन	25:56:22	14:00:20	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	05:12:50	00:42:12	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	सम राशि
बुध	अ		मेष	10:49:38	02:02:55	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	सम राशि
गुरु	अ		मेष	22:39:54	00:14:17	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			मेष	07:49:26	01:13:52	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	सम राशि
शनि	अ		मेष	25:30:34	00:07:42	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	नीच राशि
राहु	व		कर्क	03:58:24	00:10:46	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		मक	03:58:24	00:10:46	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			मक	26:45:14	00:01:07	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
नेप			मक	12:42:22	00:00:12	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	18:27:20	00:01:21	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
दशम भाव			मिथु	28:01:17	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	शुक्र	--

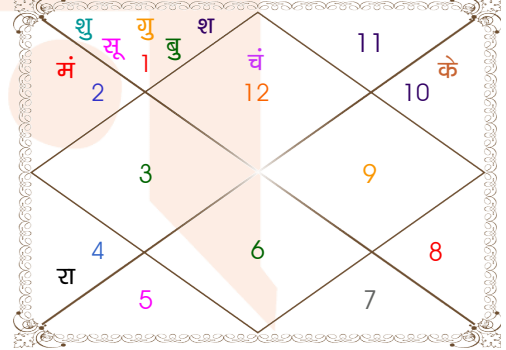
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:26

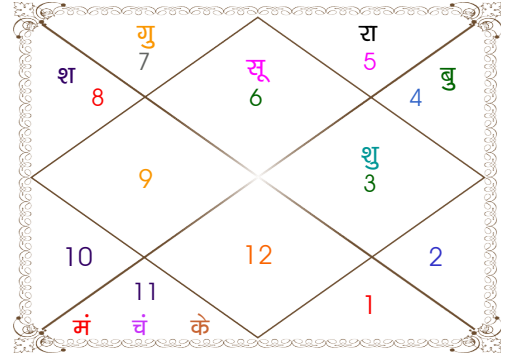
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Ankijyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 13:05:15	कन्या 28:06:02
2	तुला 13:05:15	तुला 28:04:27
3	वृश्चिक 13:03:40	वृश्चिक 28:02:52
4	धनु 13:02:04	धनु 28:01:17
5	मकर 13:02:04	मकर 28:02:52
6	कुम्भ 13:03:40	कुम्भ 28:04:27
7	मीन 13:05:15	मीन 28:06:02
8	मेष 13:05:15	मेष 28:04:27
9	वृष 13:03:40	वृष 28:02:52
10	मिथुन 13:02:04	मिथुन 28:01:17
11	कर्क 13:02:04	कर्क 28:02:52
12	सिंह 13:03:40	सिंह 28:04:27

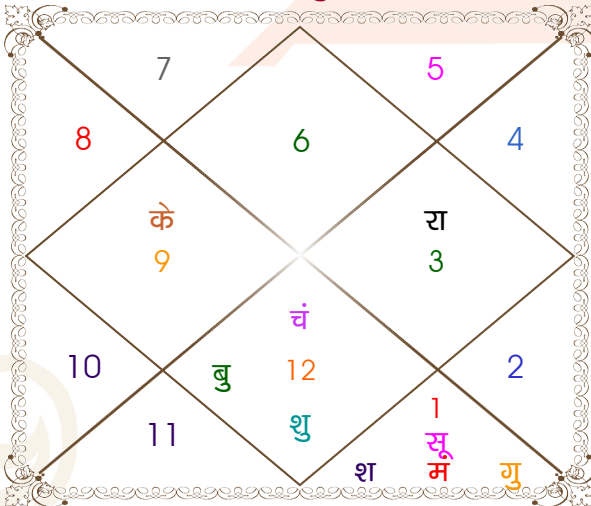
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 28:06:02	
2	तुला 27:22:20	
3	वृश्चिक 27:22:46	
4	धनु 28:01:17	
5	मकर 29:15:49	
6	कुम्भ 29:54:35	
7	मीन 28:06:02	
8	मेष 27:22:20	
9	वृष 27:22:46	
10	मिथुन 28:01:17	
11	कर्क 29:15:49	
12	सिंह 29:54:35	

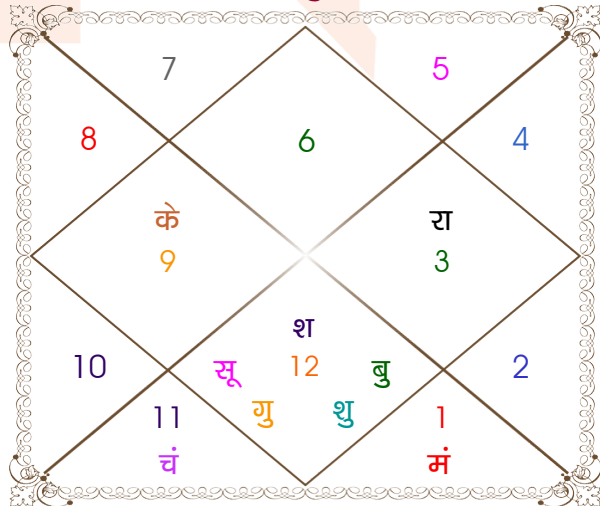
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Ankijyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

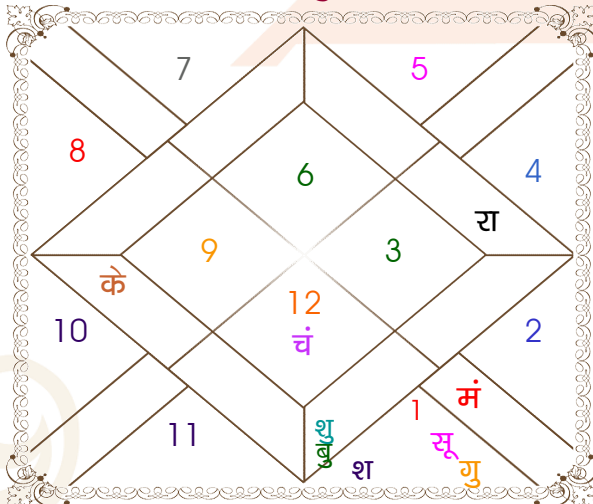
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	वृद्ध दीप्त शयन 28.58 70 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल शान्त शयन 8.58 53 %
मंगल	कलत्र	भातृ	मृत शान्त सभा 2.76 53 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार विकल गमन 0.00 23 %
गुरु	भातृ	धन	वृद्ध विकल कौतुक 0.00 37 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार निपीदित सभा 9.02 30 %
शनि	अमात्य	आयु	मृत विकल गमन 0.15 20 %
राहु	---	ज्ञान	मृत खल भोजन 0.00 60 %
केतु	---	मोक्ष	मृत खल सभा 0.00 60 %
कुल			49.09

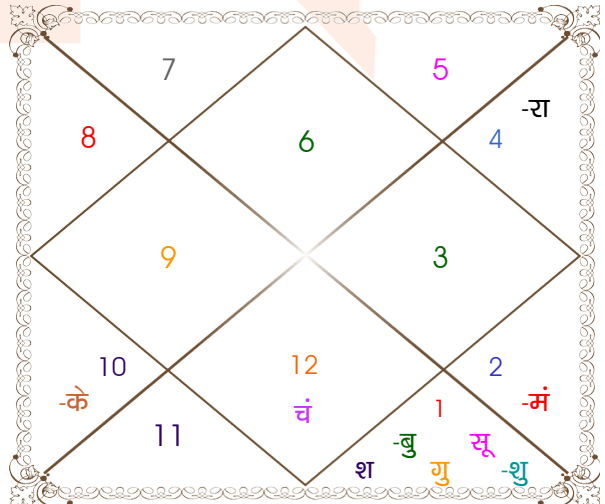
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Ankijyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 2 मास 3 दिन

बुध 17 वर्ष 02/05/2000 06/07/2005	केतु 7 वर्ष 06/07/2005 06/07/2012	शुक्र 20 वर्ष 06/07/2012 06/07/2032	सूर्य 6 वर्ष 06/07/2032 06/07/2038	चंद्र 10 वर्ष 06/07/2038 06/07/2048
00/00/0000	केतु 02/12/2005	शुक्र 05/11/2015	सूर्य 24/10/2032	चंद्र 07/05/2039
00/00/0000	शुक्र 01/02/2007	सूर्य 05/11/2016	चंद्र 24/04/2033	मंगल 06/12/2039
00/00/0000	सूर्य 09/06/2007	चंद्र 06/07/2018	मंगल 30/08/2033	राहु 06/06/2041
00/00/0000	चंद्र 08/01/2008	मंगल 06/09/2019	राहु 25/07/2034	गुरु 06/10/2042
00/00/0000	मंगल 06/06/2008	राहु 05/09/2022	गुरु 13/05/2035	शनि 06/05/2044
02/05/2000	राहु 24/06/2009	गुरु 06/05/2025	शनि 24/04/2036	बुध 06/10/2045
राहु 21/07/2000	गुरु 31/05/2010	शनि 06/07/2028	बुध 28/02/2037	केतु 07/05/2046
गुरु 27/10/2002	शनि 10/07/2011	बुध 07/05/2031	केतु 06/07/2037	शुक्र 05/01/2048
शनि 06/07/2005	बुध 06/07/2012	केतु 06/07/2032	शुक्र 06/07/2038	सूर्य 06/07/2048
मंगल 7 वर्ष 06/07/2048 07/07/2055	राहु 18 वर्ष 07/07/2055 06/07/2073	गुरु 16 वर्ष 06/07/2073 06/07/2089	शनि 19 वर्ष 06/07/2089 07/07/2108	बुध 17 वर्ष 07/07/2108 00/00/0000
मंगल 02/12/2048	राहु 19/03/2058	गुरु 24/08/2075	शनि 09/07/2092	बुध 04/12/2110
राहु 21/12/2049	गुरु 11/08/2060	शनि 07/03/2078	बुध 19/03/2095	केतु 01/12/2111
गुरु 27/11/2050	शनि 18/06/2063	बुध 12/06/2080	केतु 27/04/2096	शुक्र 01/10/2114
शनि 05/01/2052	बुध 05/01/2066	केतु 19/05/2081	शुक्र 28/06/2099	सूर्य 07/08/2115
बुध 02/01/2053	केतु 23/01/2067	शुक्र 18/01/2084	सूर्य 10/06/2100	चंद्र 06/01/2117
केतु 31/05/2053	शुक्र 23/01/2070	सूर्य 05/11/2084	चंद्र 09/01/2102	मंगल 03/01/2118
शुक्र 31/07/2054	सूर्य 18/12/2070	चंद्र 07/03/2086	मंगल 18/02/2103	राहु 03/05/2120
सूर्य 06/12/2054	चंद्र 18/06/2072	मंगल 11/02/2087	राहु 25/12/2105	00/00/0000
चंद्र 07/07/2055	मंगल 06/07/2073	राहु 06/07/2089	गुरु 07/07/2108	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 5 वर्ष 1 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि 06/05/2025 06/07/2028	शुक्र - बुध 06/07/2028 07/05/2031	शुक्र - केतु 07/05/2031 06/07/2032	सूर्य - सूर्य 06/07/2032 24/10/2032	सूर्य - चंद्र 24/10/2032 24/04/2033
शनि 05/11/2025 बुध 18/04/2026 केतु 25/06/2026 शुक्र 04/01/2027 सूर्य 02/03/2027 चंद्र 07/06/2027 मंगल 13/08/2027 राहु 03/02/2028 गुरु 06/07/2028	बुध 30/11/2028 केतु 29/01/2029 शुक्र 20/07/2029 सूर्य 10/09/2029 चंद्र 05/12/2029 मंगल 04/02/2030 राहु 09/07/2030 गुरु 24/11/2030 शनि 07/05/2031	केतु 01/06/2031 शुक्र 11/08/2031 सूर्य 01/09/2031 चंद्र 07/10/2031 मंगल 31/10/2031 राहु 03/01/2032 गुरु 29/02/2032 शनि 07/05/2032 बुध 06/07/2032	सूर्य 11/07/2032 चंद्र 21/07/2032 मंगल 27/07/2032 राहु 12/08/2032 गुरु 27/08/2032 शनि 13/09/2032 बुध 29/09/2032 केतु 05/10/2032 शुक्र 24/10/2032	चंद्र 08/11/2032 मंगल 18/11/2032 राहु 16/12/2032 गुरु 09/01/2033 शनि 07/02/2033 बुध 05/03/2033 केतु 16/03/2033 शुक्र 15/04/2033 सूर्य 24/04/2033
सूर्य - मंगल 24/04/2033 30/08/2033	सूर्य - राहु 30/08/2033 25/07/2034	सूर्य - गुरु 25/07/2034 13/05/2035	सूर्य - शनि 13/05/2035 24/04/2036	सूर्य - बुध 24/04/2036 28/02/2037
मंगल 02/05/2033 राहु 21/05/2033 गुरु 07/06/2033 शनि 27/06/2033 बुध 15/07/2033 केतु 23/07/2033 शुक्र 13/08/2033 सूर्य 19/08/2033 चंद्र 30/08/2033	राहु 18/10/2033 गुरु 01/12/2033 शनि 22/01/2034 बुध 10/03/2034 केतु 29/03/2034 शुक्र 23/05/2034 सूर्य 08/06/2034 चंद्र 06/07/2034 मंगल 25/07/2034	गुरु 02/09/2034 शनि 18/10/2034 बुध 28/11/2034 केतु 15/12/2034 शुक्र 02/02/2035 सूर्य 17/02/2035 चंद्र 13/03/2035 मंगल 30/03/2035 राहु 13/05/2035	शनि 07/07/2035 बुध 25/08/2035 केतु 14/09/2035 शुक्र 11/11/2035 सूर्य 28/11/2035 चंद्र 27/12/2035 मंगल 17/01/2036 राहु 09/03/2036 गुरु 24/04/2036	बुध 07/06/2036 केतु 25/06/2036 शुक्र 16/08/2036 सूर्य 31/08/2036 चंद्र 26/09/2036 मंगल 14/10/2036 राहु 30/11/2036 गुरु 10/01/2037 शनि 28/02/2037
सूर्य - केतु 28/02/2037 06/07/2037	सूर्य - शुक्र 06/07/2037 06/07/2038	चंद्र - चंद्र 06/07/2038 07/05/2039	चंद्र - मंगल 07/05/2039 06/12/2039	चंद्र - राहु 06/12/2039 06/06/2041
केतु 08/03/2037 शुक्र 29/03/2037 सूर्य 05/04/2037 चंद्र 15/04/2037 मंगल 23/04/2037 राहु 12/05/2037 गुरु 29/05/2037 शनि 18/06/2037 बुध 06/07/2037	शुक्र 05/09/2037 सूर्य 23/09/2037 चंद्र 24/10/2037 मंगल 14/11/2037 राहु 08/01/2038 गुरु 26/02/2038 शनि 24/04/2038 बुध 15/06/2038 केतु 06/07/2038	चंद्र 01/08/2038 मंगल 19/08/2038 राहु 03/10/2038 गुरु 13/11/2038 शनि 31/12/2038 बुध 12/02/2039 केतु 02/03/2039 शुक्र 22/04/2039 सूर्य 07/05/2039	मंगल 19/05/2039 राहु 20/06/2039 गुरु 19/07/2039 शनि 21/08/2039 बुध 21/09/2039 केतु 03/10/2039 शुक्र 08/11/2039 सूर्य 18/11/2039 चंद्र 06/12/2039	राहु 26/02/2040 गुरु 09/05/2040 शनि 04/08/2040 बुध 21/10/2040 केतु 21/11/2040 शुक्र 21/02/2041 सूर्य 20/03/2041 चंद्र 05/05/2041 मंगल 06/06/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र
06/06/2041	06/10/2042	06/05/2044	06/10/2045	07/05/2046
06/10/2042	06/05/2044	06/10/2045	07/05/2046	05/01/2048
गुरु 10/08/2041	शनि 05/01/2043	बुध 18/07/2044	केतु 18/10/2045	शुक्र 16/08/2046
शनि 26/10/2041	बुध 28/03/2043	केतु 18/08/2044	शुक्र 22/11/2045	सूर्य 15/09/2046
बुध 03/01/2042	केतु 01/05/2043	शुक्र 12/11/2044	सूर्य 03/12/2045	चंद्र 05/11/2046
केतु 31/01/2042	शुक्र 05/08/2043	सूर्य 08/12/2044	चंद्र 21/12/2045	मंगल 11/12/2046
शुक्र 22/04/2042	सूर्य 03/09/2043	चंद्र 20/01/2045	मंगल 02/01/2046	राहु 12/03/2047
सूर्य 17/05/2042	चंद्र 22/10/2043	मंगल 19/02/2045	राहु 03/02/2046	गुरु 01/06/2047
चंद्र 26/06/2042	मंगल 24/11/2043	राहु 08/05/2045	गुरु 04/03/2046	शनि 06/09/2047
मंगल 25/07/2042	राहु 19/02/2044	गुरु 16/07/2045	शनि 06/04/2046	बुध 01/12/2047
राहु 06/10/2042	गुरु 06/05/2044	शनि 06/10/2045	बुध 07/05/2046	केतु 05/01/2048
चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि
05/01/2048	06/07/2048	02/12/2048	21/12/2049	27/11/2050
06/07/2048	02/12/2048	21/12/2049	27/11/2050	05/01/2052
सूर्य 14/01/2048	मंगल 15/07/2048	राहु 29/01/2049	गुरु 04/02/2050	शनि 30/01/2051
चंद्र 30/01/2048	राहु 06/08/2048	गुरु 21/03/2049	शनि 30/03/2050	बुध 28/03/2051
मंगल 09/02/2048	गुरु 26/08/2048	शनि 21/05/2049	बुध 17/05/2050	केतु 21/04/2051
राहु 08/03/2048	शनि 19/09/2048	बुध 14/07/2049	केतु 06/06/2050	शुक्र 27/06/2051
गुरु 01/04/2048	बुध 10/10/2048	केतु 05/08/2049	शुक्र 02/08/2050	सूर्य 17/07/2051
शनि 30/04/2048	केतु 18/10/2048	शुक्र 08/10/2049	सूर्य 19/08/2050	चंद्र 20/08/2051
बुध 26/05/2048	शुक्र 12/11/2048	सूर्य 27/10/2049	चंद्र 17/09/2050	मंगल 13/09/2051
केतु 06/06/2048	सूर्य 20/11/2048	चंद्र 28/11/2049	मंगल 06/10/2050	राहु 12/11/2051
शुक्र 06/07/2048	चंद्र 02/12/2048	मंगल 21/12/2049	राहु 27/11/2050	गुरु 05/01/2052
मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र
05/01/2052	02/01/2053	31/05/2053	31/07/2054	06/12/2054
02/01/2053	31/05/2053	31/07/2054	06/12/2054	07/07/2055
बुध 26/02/2052	केतु 10/01/2053	शुक्र 10/08/2053	सूर्य 06/08/2054	चंद्र 23/12/2054
केतु 18/03/2052	शुक्र 04/02/2053	सूर्य 31/08/2053	चंद्र 17/08/2054	मंगल 05/01/2055
शुक्र 17/05/2052	सूर्य 12/02/2053	चंद्र 06/10/2053	मंगल 24/08/2054	राहु 06/02/2055
सूर्य 04/06/2052	चंद्र 24/02/2053	मंगल 30/10/2053	राहु 13/09/2054	गुरु 06/03/2055
चंद्र 04/07/2052	मंगल 05/03/2053	राहु 02/01/2054	गुरु 30/09/2054	शनि 09/04/2055
मंगल 26/07/2052	राहु 27/03/2053	गुरु 28/02/2054	शनि 20/10/2054	बुध 09/05/2055
राहु 18/09/2052	गुरु 16/04/2053	शनि 07/05/2054	बुध 07/11/2054	केतु 22/05/2055
गुरु 05/11/2052	शनि 10/05/2053	बुध 06/07/2054	केतु 14/11/2054	शुक्र 26/06/2055
शनि 02/01/2053	बुध 31/05/2053	केतु 31/07/2054	शुक्र 06/12/2054	सूर्य 07/07/2055

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

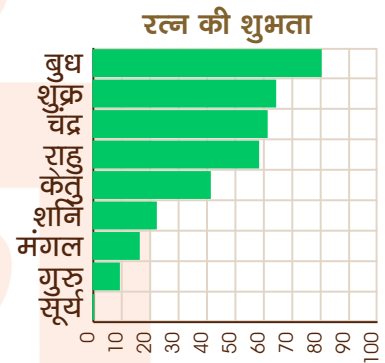
मूलांक	2
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 7, 8, 9
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता क्षेत्र
पन्ना	बुध	80% दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	64% दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	61% दम्पति, धनार्जन
गोमेद	राहु	58% धनार्जन, दम्पति
लहसुनिया	केतु	41% सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	22% दुर्घटना, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	16% नेष्ट भाग्य, दुर्घटना, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	9% दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0% दुर्घटना, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	06/07/2005	0%	47%	16%	92%	9%	70%	22%	58%	41%
केतु	06/07/2012	0%	47%	28%	80%	9%	70%	0%	41%	58%
शुक्र	06/07/2032	0%	47%	16%	86%	9%	77%	34%	64%	52%
सूर्य	06/07/2038	0%	67%	28%	80%	22%	52%	0%	41%	16%
चंद्र	06/07/2048	0%	73%	16%	86%	9%	64%	22%	41%	16%
मंगल	07/07/2055	0%	67%	41%	67%	22%	64%	22%	41%	52%
राहु	06/07/2073	0%	47%	0%	80%	9%	70%	34%	70%	16%
गुरु	06/07/2089	0%	67%	28%	67%	34%	52%	22%	58%	41%
शनि	07/07/2108	0%	47%	0%	86%	9%	70%	47%	64%	16%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा, मोती एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम, मूंगा, पुखराज व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त बनाये रखेगा। यह शुभ रत्न पन्ना आपको प्रसिद्ध, यशस्वी और राज्यमान बनायेगा। रत्न प्रभाव से आप प्रसिद्ध और धनी बनेंगे। आपकी स्मरण शक्ति प्रबल होगी। रत्न की अनुकूलता आपको कुल पोषक और श्रेष्ठ व्यक्ति बनाएगी। पन्ना रत्न से आपके वैभव और संपत्ति में बढ़ोतरी होगी। आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती है। पन्ना रत्न आपको आपके शत्रुओं पर सरलता से विजय पाने में सहयोग देगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान्, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी टालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः

का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपमें नकारात्मक

विचारों का बाहुल्य हो सकता है। गलत निर्णयों के लिए आपको पश्चाताप करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से भ्रमात्मक ज्ञान और गलती के कारण शारीरिक कष्ट मिल सकते हैं। सगे भाइयों से विवाद हो सकता है। तंत्र-मंत्र के माध्यम से कष्ट मिल सकता है। लहसुनिया रत्न संतान सुख में कमी कर सकता है। उदर भाग में चोट लगने के कारण या अन्य कारणों से कष्ट मिल सकते हैं। लहसुनिया रत्न धारण से आप सफलता के लिए छल कपट का सहारा ले सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस भाव की कमी का कारण बन सकता है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ़ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। षष्ठेश शनि का रत्न नीलम आपके रोगों को प्रभावी कर सकता है। नीलम रत्न आपके रोग, ऋण और सेवा भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। स्वास्थ्य की अनियमितता भी यह रत्न आपको दे सकता है। शत्रु वृद्धि के कारण आप अपनी ऊर्जा शक्ति सकारात्मक कार्यों में नहीं लगा पाएंगे। छूटे भाव का रत्न आपको जीवन में अर्थ की कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप नौकरी क्षेत्र में लगाए रखेगा। इसके कारण आपको व्यापार आदि कार्यों से दूर रहना पड़ सकता है। नीलम रत्न आपमें सदभाव और स्नेह की कमी कर सकता है। अधिक मेहनत के कार्यों में आपको रुचि की कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपमें आलस्य भाव भी दे सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपके पिता और छोटे भाई का स्वभाव रुखा और गुस्सैल हो सकता है। रत्न प्रभाव से आपके जीवन काल में कुछ

कानूनी अडचने आ सकती है। आपके लिए दूर की ओर समुद्र पार की यात्राएं हानिकार हो सकती हैं। मूंगा रत्न पहनने पर आपको घर में रखे सोने को बेचने से बचना चाहिए। रत्न की प्रतिकूलता से बचने के लिए आपका आत्मिक रूप से धार्मिक बना रहना शुभ होगा। मूंगा रत्न आपके मित्रों की संख्या को बढ़ा सकता है। अभिमान भाव आपके सम्मान को प्रभावित कर सकता है। मूंगा रत्न से आपके पराक्रम भाव में कमी हो सकती है। पिता को विषम परिस्थियों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती हैं। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते हैं। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे हैं। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का हास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते हैं। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने

सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते हैं। हृदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(06/07/2012 - 06/07/2032)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(06/07/2032 - 06/07/2038)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य व नीलम रत्न

वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र

(06/07/2038 - 06/07/2048)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम, मूंगा, लहसुनिया, पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(06/07/2048 - 07/07/2055)

मोती, पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, नीलम व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(07/07/2055 - 06/07/2073)

राहु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(06/07/2073 - 06/07/2089)

मोती, पन्ना, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और नीलम व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(06/07/2089 - 07/07/2108)

शनि की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ॐ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती है। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव है। आपकी यात्राओं में विध्वन बाधाएं दे सकता है। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता है। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती है। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

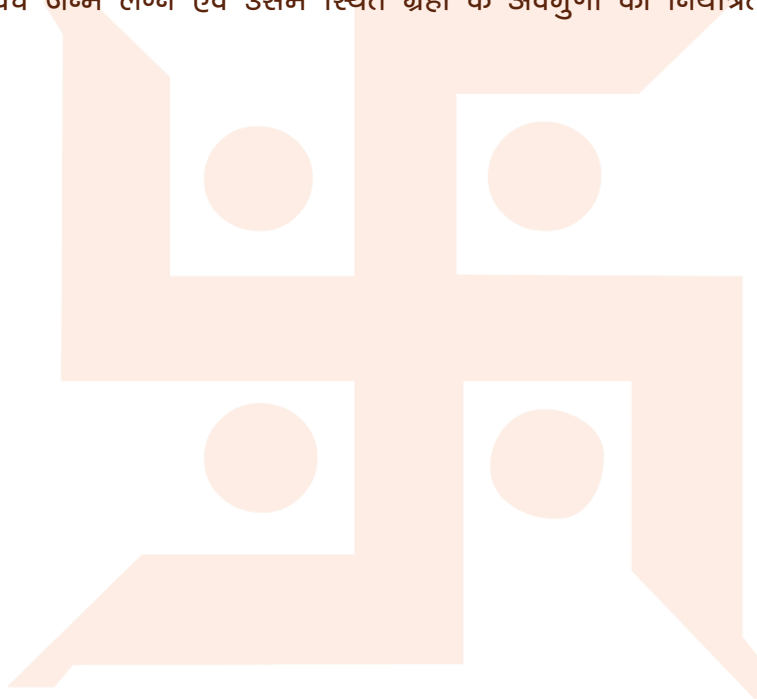
गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/05/2000-07/06/2000	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना
व्यावसाय
धन
शत्रु व रोग मुक्ति
दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को अपने जन्मस्थान से दूर रहना पड़ता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है। कुछ समय बाद जातक के जीवन में स्थायित्व आ जाता है। जातक को ज्ञान प्राप्त करने में व्यवधान उपस्थित होता है। खासकर उच्च शिक्षा में विशेष रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। स्मरण शक्ति का हास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से पूर्ण लाभ की आशा होते हुए भी हानि होती है। चाचा, चचेरे भाईयों से झगड़ा या मनमुटाव रहता है। बड़े भाई से मतान्तर या विवाद रहता है। लाभ में भयंकर बाधा रहती है। धन के मामले को लेकर बदनामी या संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। परिवार में विग्रह रहता है। जातक को सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रूपयों की तरह हाथ नहीं लगता।

इस योग के प्रभाव से सन्तान अस्वस्थ रहते हैं एवं सन्तान पक्ष से जातक को परेशानी उठानी पड़ती है। जातक के शरीर में रोग व्याधि लग जाती है। जिसमें खासकर हृदय रोग, नेत्र रोग, अनिद्रा आदि होने की पूर्ण सम्भावना होती है और उससे जातक को कष्ट उठाना पड़ता है। जातक का जीवन संघर्षमय रहता है। मानसिक चिन्ता व परेशानी घेरे रहती हैं। जीवन का अन्त रहस्यपूर्ण ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।
10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा

महीने तक स्नान करें।

13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।

14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम् भाव में स्थित है ।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि और केतु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या

जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उच्चभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराकमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रुचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति उनके मन में आकर्षण की प्रबलता रहती है। वे भाग्यशाली भी होते हैं तथा उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रुचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे।

लग्न में बुध की राशि के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जाने जाएंगे। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं साहित्य के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगे। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति होंगे।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगे तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगे श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रुचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगे।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रुचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूँजी निवेश कर सकते हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंकों से ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं उग्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर इस तीव्रता एवं उग्रता की अवश्य छाप होगी। इससे अन्य सामाजिक लोग आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म ग्रंथों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं साहित्य में पूर्ण रूचि होगी तथा यत्न पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में नित्य अध्ययनशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनमें विशिष्ट शोध कार्य या सिद्धांतों का प्रति-पादन भी कर सकते हैं। इस सबसे आप एक विद्वान के रूप में समाज के समक्ष स्वयं को स्थापित करेंगे जिससे वांछित सम्मान प्राप्त होगा।

केतु की स्थिति शनि की राशि में होने के कारण प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। ऐसे सम्बन्ध आप मनोरंजन एवं दिलबहलाव के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंगों में भावनात्मक आकर्षण की अपेक्षा भौतिक आकर्षण होगा जिससे यदा-कदा आप नैतिकता या मर्यादा का भी अतिक्रमण कर सकते हैं। लेकिन यदि आप ऐसा करेंगे तो आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा सामाजिक सम्मान भी प्रभावित होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। सन्तति भाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से सन्तति प्राप्ति में आपको विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु सन्तति अवश्य होगी। आपकी सन्तति तेजस्वी पराक्रमी एवं उग्र स्वभाव से युक्त होगी परन्तु जीवन में स्वपराक्रम से वे उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के प्रति आंतरिक रूप से उनके मन में पूर्ण मान-सम्मान का भाव होगा परन्तु प्रत्यक्ष रूप से वे आज्ञापालन कम ही करेंगे तथा अपनी इच्छा के कार्य अधिक करेंगे। वे महत्वपूर्ण शुभ एवं सांसारिक कार्यों को भी अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करेंगे तथा माता-पिता से सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इसको आप बुरा नहीं मानें तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य को सम्पन्न करने दें। इसी से दोनों पक्षों का कल्याण होगा तथा आपस में विश्वास तथा सद्भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में अपने लिए यथोचित धन संग्रह करके रखना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से बच्चों की ओर से सेवाभाव की अपेक्षा न करें। अध्ययन की दृष्टि से आपकी सन्तति सामान्य उन्नतिशील होगी तथा परिश्रम से ही वे शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगी। हालांकि आप भी उनके लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे लेकिन वे पराक्रमी एवं व्यावहारिक होंगे। अतः कम शिक्षा से भी वे जीवन में यथोचित मात्रा में जीविकार्जन में पूर्णरूपेण समर्थ होंगे। अतः आपको उनकी ओर से विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उनका अन्य जनों से विवाद होता रहेगा जिससे अपने सद्ब्यवहार से संभालने की कोशिश करेंगे लेकिन मानसिक तनाव की अनुभूति करेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया मीन राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील कफ वात प्रकृति वाला धर्म में श्रद्धालु एवं धनवान होता है चन्द्रमा के प्रभाव से वह शिक्षित कला एवं संगीत प्रेमी एवं अपने उत्तम कार्य कलाओं से अन्य जनों को प्रभावित करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलाओं को सम्पन्न करने में चतुराई का प्रदर्शन करेंगी। धर्म के प्रति वे श्रद्धालु रहेंगी। वह शिक्षित महिला होंगी तथा उच्च कोटि के साहित्य का अध्ययन करने में रुचिशील होगी चन्द्रमा के प्रभाव से वह ममतामयी होगी एवं कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा कद भी मध्यम रहेगा। उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा अंगों की पुष्टता तथा सुडौलता उनके आकर्षण में वृद्धि करेंगी लेकिन आयु के साथ साथ जलचर राशि मीन जलीय ग्रह चन्द्र के प्रभाव से शरीर में स्थूलता आ सकती है लेकिन सौन्दर्य पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा इसके अतिरिक्त संगीत एवं कला में भी रुचिशील रहेंगी तथा सुंदर वस्तुओं का भी संग्रह करेंगी।

आपका विवाह निकट संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा इसमें महिला संबन्धियों का विशेष योगदान होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे का सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे परस्पर समानता का भाव रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता रहेगी जिससे वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्न पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से उनका स्तर साधारण होगा। विवाह में आपको धन सम्पत्ति या दहेज की अल्प मात्रा में ही प्राप्ति होगी परन्तु किंचित उपहार अन्यत्र से प्राप्त हो सकते हैं। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको नैतिक सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी साथ ही आप भी उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार तथा मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इसमें वांछित लाभ होगा। यदि स्त्री या मातृपक्ष से साझेदारी की जाए तो इसमें विशिष्ट लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि सप्तम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि दशम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि एकादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि दशम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरुएवं शनि ग्रह अनुकूल स्थान में होना चौमुखी विकास के संकेत हैं। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खर्च करेंगे।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों के यहां मांगलिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मई के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

पंचम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य व परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा। अप्रैल के बाद आपके बच्चे उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरुकी पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद सप्तम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। स्वस्थ शरीर के लिए अनुशासित दिनचर्या व उचित खान-पान ग्रहण करें साथ ही व्यायाम करना भी लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी मनोनुकूल उपलब्धि प्राप्त करेंगे।

मई के बाद राहु ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा उस समय प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी एवं नौकरी भी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में गुरुग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए उन्नतिकारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

14 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है या पूरे परिवार साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द उठाएं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरुके कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरुके द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे।

- नित्य स्नानादि के निवृत्त होकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ का करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

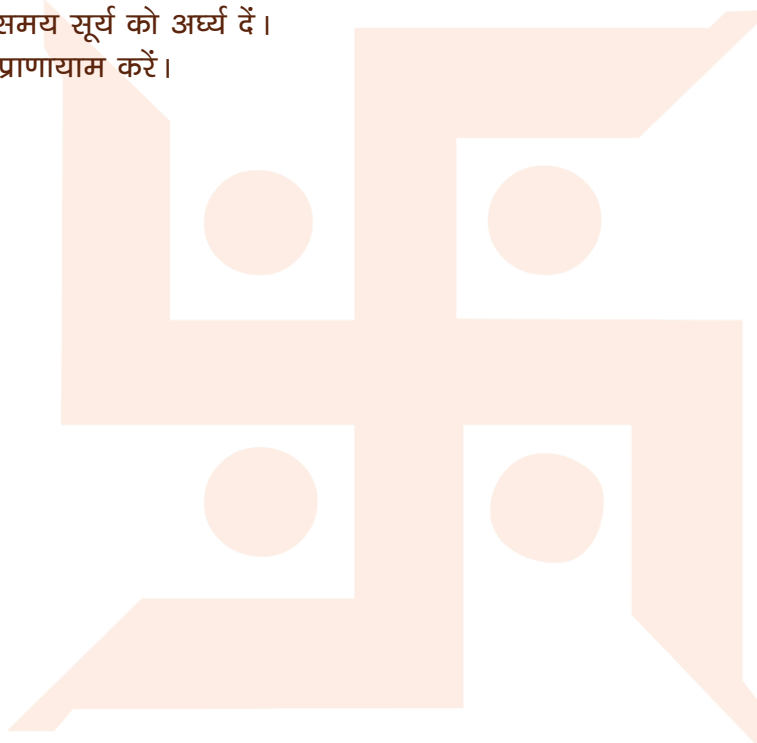
यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

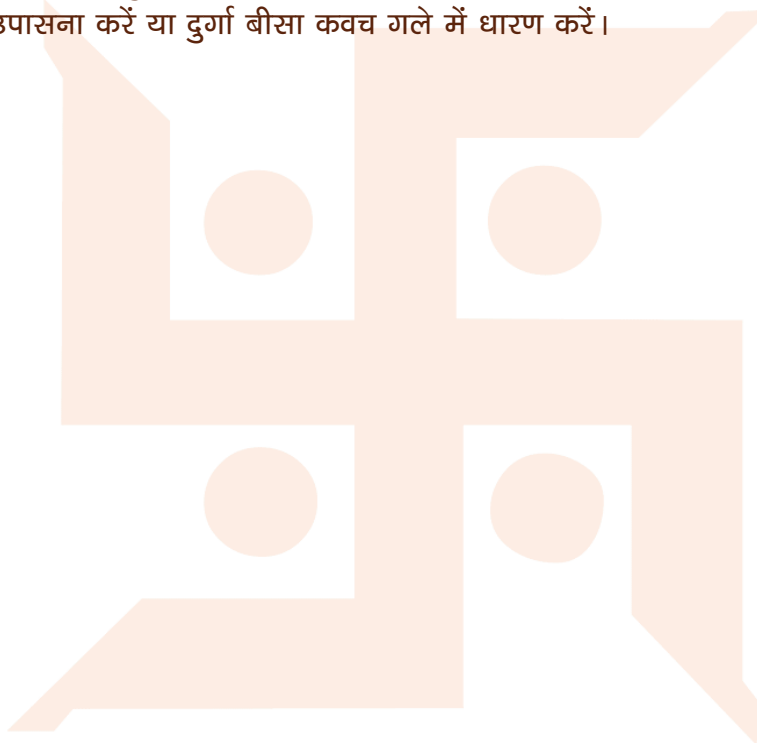
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(06/07/2012 - 06/07/2032)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 06/07/2012 को आरंभ होकर 06/07/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात् अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते हैं अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(05/09/2022 - 06/05/2025)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/07/2012 को आरंभ हुई थी और 06/07/2032 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 05/09/2022 को प्रारंभ होकर 06/05/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 12, 2, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पापकर्म में प्रवृत्त हो सकते हैं मगर दिखावा ऐसा करेंगे कि बहुत धार्मिक स्वभाव के हैं। विधवा स्त्रियों से संपर्क हो सकता है जिससे साख की क्षति होगी। दयालु होंगे मगर अप्रसन्न रहेंगे। प्रत्येक कदम उठाने से पूर्व गंभीर विचार आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(06/05/2025 - 06/07/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/07/2012 को प्रारंभ हुई थी और वद 06/07/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 06/05/2025 को प्रारंभ होकर 06/07/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि आयुष्कारक है। अष्टम भाव में इसकी स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आपको कई जिम्मेदारियां मिलेंगी जिन्हें आप धैर्य और परिश्रम से निबाहेंगे। मार्ग में कई बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें हिम्मत से पार कर लेंगे। दमे और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। बेईमानी और निर्दयता से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए नीलम सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की

मध्यमा उंगली में, शनिवार को रात्रिभोज के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(06/07/2028 - 07/05/2031)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/07/2012 को प्रारंभ हुई थी और वद 06/07/2032 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 06/07/2028 जो आपके लिए 07/05/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और ज्ञानवान बनेंगे। छात्रवृत्ति प्राप्त हो सकती है। धन का संचय होगा, विरासत में भी धन मिल सकता है। योग्यता और मृदु स्वभाव के लिए प्रशंसा मिलेगी।

आप दीर्घायु होंगे मगर स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है। स्वस्थ रहने के लिए अधिक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।